Vol 1 Issue 1 July 2011 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.in

ISSN No-2031-5063 Vol.1,Issue.I/July 11pp.1-6

Research Papers

'उत्तरांचल में समकालीन रंगमंचीय संस्थाएँ'

सुशील कुमार

प्रवक्ता(हिन्दी) , रा.इ.का. नौल–बासर , टिहरी गढ़वाल .

प्रस्तावना

वर्तमान समय में उत्तरांचल में अनेक नाट्य संस्थाएँ सक्रिय है। आज उत्तरांचल के अनेक नवयुवक व नवयुवतियाँ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। अनेक प्रतिभाएँ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त कर या तो उत्तरांचल के रंगमंच के विकास में अपना योगदान दे रही है। उत्तरांचल से बाहर (उत्तरांचल अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर) अपनी अभिनय क्षमता का परिचय दे रही है। इन सभी प्रतिभाओं के निर्माण में यहाँ सक्रिय रंगमंचीय संस्थाओं का बहुत बड़ा योगदान है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में प्रशिक्षु–स्नातक की चयन प्रक्रिया अत्यन्त कठिन है, क्योंकि इसमें हजारों रंगकर्मियों के मध्य कड़ी प्रतियोगिता के पश्चात ही सफलता प्राप्त होती है। लेकिन इस सबके पश्चात भी उत्तरांचल में सक्रिय अनेक नाट्य–संस्थाओं से निकले रंगकर्मी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय व अन्य राष्ट्रीय संस्थानों में चयनित हुए हैं और आज भी चयनित हो रहे हैं। ललित तिवारी, सुदर्शन जुयाल, इशान त्रिवेदी, इदरीस मलिक, सुनीता अवस्थी, हिमानी भट्ट (शिवपुरी), निर्मल पाण्डे आदि अनेक रंगकर्मी उत्तरांचल में स्थित नाट्य संस्थाओं में सक्रिय रहकर ही राष्ट्रीय संस्थाओं में प्रशिक्षण के लिए चुने गए।'[1]

उत्तरांचल में सक्रिय नाट्य संस्थाओं की संख्या लगभग 200 से अधिक है। इसके अलावा रामलीला समितियों, कृष्णलीला समितियों व शैक्षिक संस्थानों (विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, इण्टर कालेजों) में स्थित नाट्यमण्डलियों की संख्या का सही–सही अनुमान लगाना अत्यन्त कठिन है। उत्तरांचल के गाँव–गाँव में रामलीला समितियाँ है, जो प्रतिवर्ष रामलीलाओं का आयोजन तो करवाती ही है, इसके अलावा चौदह दिवसीय रामलीला के बीच–बीच में अन्य हास्य–व्यंग्य नाटक व समाजिक समस्याओं से सम्बद्ध नाटकों की प्रस्तुतियाँ भी करती हैं। कृष्ण लीला समितियों की संख्या अधिक नहीं है, तब भी अनेक गाँवों अथवा उपनगरों–नगरों में कृष्णलीला समितियाँ व रामलीला समितियाँ अस्तित्व में हैं व कृष्ण से जुड़ी अनेक घटनाओं पर नाटक प्रस्तुत करती हैं। हरिद्वार जनपद में इस प्रकार की समितियाँ अधिक सक्रिय हैं। उत्तरांचल देवभूमि होने के कारण स्वाभाविक रूप से धार्मिक–रंगमंच का केन्द्र है। गाँव–गाँव में भागवत कथा और रामलीलाओं का आयोजन सामान्य दिनचर्या में सम्मिलित हैं। 25 नवम्बर 2002 को नैनीताल में राजेन्द्र धस्माना जी से हमारी उत्तरांचल में स्थित नाट्य संस्थाओं पर विस्तृत बातचीत हुई। श्री राजेन्द्र धस्माना जी का कहना था कि "उत्तरांचल में नाट्य संस्थाओं की वह सक्रियता नहीं है, जो महाराष्ट्र, गुजरात व बंगाल में है। वहाँ की नाट्य–संस्थाएँ रंगकर्मियों के रोजगार का भी साधन है। जबकि उत्तरांचल में नाट्य संस्थाओं को आर्थिक–संकट से जूझना पड़ता है। यही नहीं बंगाल व महाराष्ट्र सरकारों की तरह यहाँ की सरकार भी रंगमंच के प्रोत्साहन पर ध्यान नहीं दे रही है। मैं राजेन्द्र धस्माना जी के मत से पूर्णतः सहमत हूँ लेकिन मुझे उत्तरांचल में नाट्य–संस्थाओं की सक्रियता पर कोई संदेह नहीं है। वास्तव में अपने सर्वेक्षण में मैंने पाया कि उत्तरांचल में अनेक नाट्य संस्थाएँ रंगमंच के विकास में अपना सक्रिय योगदान दे रही है। चाहे नैनीताल की 'युगमंच' नाट्यसंस्था हो चाहे टिहरी पौड़ी की 'जागर' व उत्तरकाशी की 'कलादर्पण' हो। ये सभी नाट्य संस्थाएँ अब तक सैकड़ों नाटकों का रंगमंच पर सशक्त मंचन कर चुकी है। अनेक नाट्य संस्थाएँ राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित नाट्य– प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। अपने शोध–प्रबन्ध के लिये किए गए सर्वेक्षण के लए हम लगभग बीस से अधिक सक्रिय नाट्य संस्थाओं के संपर्क में आये। ये उत्तरांचल की ऐसी नाट्य संस्थाएँ हैं जो उत्तरांचल में रंगमंच की रीढ़ हैं। इनमें ग्रामीण क्षेत्रों में सक्रिय नाट्य–संस्थाओं का रंगमंच के विकास में उल्लेखनीय योगदान है। उपनगरों –नगरों में स्थित नाट्य–संस्थाएँ स्थानीय बालियों के साथ–साथ हिन्दी में नाटकों को मंचित करती है। इस दृष्टि से गढ़वाली व कुमाऊँनी बोलियों के नाटकों का मंचन जहाँ पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक होता है। वहीं उत्तरांचल के मैदानी क्षेत्रों(देहरादून, हरिद्वार, ऊधमसिंह नगर) में हिन्दी में नाटकों का मंचन अधिक होता होता है। ध्यातव्य है कि गढ़वाली व कुमाऊँनी बोलियाँ हिन्दी की ही पहाड़ी बोलियाँ है। भाषा–विज्ञान की दृष्टि से भी गढ़वाली व कुमाऊँनी बोलियाँ हिन्दी के उसी प्रकार निकट है, जिस प्रकार अवधी, ब्रज, मैथिली, भोजपुरी, मारवाड़ी व बुंदेलखण्डी है। गढ़वाल व कुमाऊँ में पारस्परिक–विचार–विनिमय की जो भाषा है वह हिन्दी भाषा ही है। इसलिए उत्तरांचल में स्थित नाट्य संस्थाएँ भाषायी–पूर्वाग्रह से सर्वथा मुक्त हैं। यहाँ प्रस्तुत है कतिपय प्रमुख नाट्य–संस्थाओं का संक्षिप्त परिचय :–

1. 'युगमंच' नैनीताल :– हिन्दी रंगमंच में पिछले 26 सालों से सक्रिय उत्तर भारत के प्रमुख रंगमण्डलों में एक है। नाटकों में रूचि रखने वाली उत्तरांचल की चन्द मशहूर हस्तियों ने पर्वतीय लोककला को सहेजने के विचार से एक संस्था के निर्माण की कल्पना की और 1975–76 में नैनीताल में युगमंच की स्थापना हुई। अपनी पैदाइश से अब तक युगमंच ने न सिर्फ अपनी सक्रियता को लगातार बनाये रखा, बल्कि अभावों व मुश्किलों के बीच निरन्तर काम करते रहने की एक अपनी ही शैली विकसित की है। और यह भी किसी सरकारी मदद अथवा किसी बड़े की कृपा के बिना। कांटों भरे इस सफर का परिणाम

Vol.1,Issue.I/July 11

है कि युगमंच से नाटकों का अक्षर ज्ञान लेकर निकले कई रंगकर्मी आज फिल्म, टेलिविजन और रंगमंच के जानेमाने कलाकर हैं। यह गौर तलब है कि युगमंच अब तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली को 15 और फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान पुणे को 6 स्नातक दे चुका है। छोटे शहर की साधनहीन संस्था के लिए यह अपने मे किसी कीर्तिमान से कम नहीं। हिन्दी के लगभग सभी चर्चित नाटकों के अलावा युगमंच ने अब तक इडिपस, हैमलेट जैसे शास्त्रीय नाटकों का भी सफल मंचन किया है और आज जब सीरियल संस्कृति की मार से हिन्दी रंगमंच पृष्ठभूमि में सिमटता नजर आ रहा है, युगमंच पूरी धूम से अपनी रजत जयन्ती मना चुकी है। इस सफलता का राज है रंगकर्म के प्रति समर्पण और हमजन से संस्था का प्रगाढ़ सम्बन्ध।

युगमंच पिछले आठ वर्षों से जन संस्कृति मंच के साथ मिलकर प्रतिवर्ष मई माह में एक अखिल भारतीय नुक्कड़ नाटक समारोह का आयोजन करता है। उत्तरांचल आन्दोलन के दौरान युगमंच ने सांस्कृतिक हस्तक्षेप के जरिये विशेष भागीदारी की। कड़कती ठंड में युगमंच के रंगकर्मियों द्वारा नैनीताल की जनता के साथ मिलकर लगातार दो माह तक रोजाना प्रभात फेरी निकाली और जनमानस को झकझोरा। कई नगरों, गाँवों में आन्दोलन पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी आयोजित की। उत्तरांचल आन्दोलन से उपजे जनगीतों का कैसेट 'कदम मिला के चल' निकाला और आन्दोलन से उपजी कविताओं व गीतों का संग्रह 'चलो कि मंजिल दूर नहीं' प्रकाशित किया। इन सभी आयोजनों को पहाड़ की उद्वेलित जनता द्वारा हाथों–हाथ लिया गया। साथ ही युगमंच कुमाऊँनी रामलीला में भी सक्रिय भागीदारी करता है।

बी0बी0सी0 लन्दन के एक नाट्य सर्वे कार्यक्रम में युगमंच का नाम प्रमुखता से लिया गया। जागरण वार्षिक ;ल्मंत ठववाद्ध में युगमंच को देश की गिनी चुनी नाट्य संस्थाओं में प्रमुखता से छापा गया है।

निर्मल पाण्डे, ललित तिवारी व ज्ञान प्रकाश आदि फिल्मी जगत के चमकते सितारे हैं।

युगमंच के निर्देशन जहूर आलम ने हमें बताया कि "युगमंच प्रतिवर्ष एक वृहद् होली महोत्सव का भी आयोजन करता है जिसमें कुमाऊँ के परम्परागत होली गायकों के अतिरिक्त देश के विभिन्न अंचलों से आये 200 के लगभग होली कलाकार भागीदारी करते हैं। वर्ष 2000 में युगमंच के रजत जयंती समारोहों के अन्तर्गत सालभर के कार्यक्रमों का एक वृहद खाका तैयार किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों की मदद से नाट्य समारोहों, सेमिनार, नाट्य कार्यशालाएँ, लोक कला मेला, संग्रहणीय स्मारिका का प्रकाशन, कलाकार समागम आदि कार्यक्रम करने की कार्ययोजना तैयार की जा रही है। संस्था को अनेक नाट्य समारोहों और प्रतियोगिताओं में अनेक पुरस्कार मिले हैं।" '[2]

युगमंच के द्वारा मंचित कुछ प्रमुख नाटक इस प्रकार हैं–

क्र.सं.	नाटक	लेखक	निर्देशक
1	नदी नाव मुसाफिर	इक्बाल मजीद	के.पी.शाह
2	अन्धा युग	धर्मवीर भारती	स्व. लेनिन पंत व गिर्दा
3	अन्धेर नगरी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	कान्ता प्रसाद व गिर्दा
4	भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	धर्मवीर परमार
5	नगाड़े खामोश हैं	गिर्दा	धर्मवीर परमार
6	जूलूस	बदल सरकार	ललित तिवारी
7	सृष्टि का आखरी आदमी	धर्मवीर भारती	अनिल पंत
8	त्रिशंकु	बृजमोहन शाह	सामूहिक
9	एक था गधा	शरद जोशी	उमेश त्रिपाठी
10	शंबूक ही हत्या	नरेन्द्र कोहली	विनय कक्कड़
11	उलझी आकृतियाँ	धीरत पंत	धीरज पंत
12	किस्सा ए तोता मैना	पं. रंगी लाल	विनय कक्कड़
13	धनुष यज्ञ	गिर्दा	विनय कक्कड़
14	दाज्यू	शेखर जोशी	धर्मवीर परमार
15	बादशाह बेगम गुलाम	गिरिराज किशोर	प्रताप सिंह रावत
16	कबिरा खड़ा बाजार में	भीष्म साहनी	अनिल घिल्डिया
17	राजा का बाजा	जनवादी नाट्य संघ सम्पादन	विनय कक्कड़
18	नाटक जारी है	भारतेन्दु आलेख राजीव	जहूर आलम
19	समरथ को नहि दोष	बर्तोल्त ब्रेंख्त	स्लीम आरिफ
20	मेन विदुउट शैडोज	ज्यां पॉल सात्रं	ललित तिवारी
21	शाहंशाह इडिपस	सेफोक्लीज	अनिल पंत
22	खड़िया का घेरा	ब्रेख्त	इदरीस मलिक
23	हैमलेट	शेक्सपियर	इदरीस मलिक
24	चन्द्रहास	के.वी. पुट्टपा/ब.व. कारन्थ	ज्ञान प्रकाश
25	जिन लाहौर नई देख्या	असगर बजाहत	निर्मल पाण्डे
26	गोरख्याणी से गढ़वाली	प्रदीप पाण्डे	गिर्दा
27	बड़ा बेटा	एलैकजेन्डर वैम्पीलोव/वी. नीरज शाह	श्राजीव कुमार
28	महर ठाकुरों का गाँव	लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'बटरोही' एच.एसराणा	मंजूर हुसैन, एच.एस. राणा

2.'वातायन' देहरादून :– वातायन की पहली प्रस्तुति 'लाश' (लेखक सुभाष पंत) का मंचन 14 अक्टूबर 1978 को हुआ था। वातायन संस्था का गठन संस्था के वरिष्ठ रंगकर्मियों स्व. श्री अशोक चक्रवर्ती, श्री रामप्रसाद 'अनुज', गजेन्द्र वर्मा, सुभाष पंत, स्व0 श्री अवधेश कुमार, लाडी, सहदेव नेगी, सतीश चाँद आदि ने सन् 1978 में किया।

वातायन द्वारा पहला नाटक लाश का मंचन किया गया तथा लाश के बाद संस्था अब तक लगभग 50 नाटकों का मंचन न सिर्फ देहरादून स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी कर चुकी है। '[3]

वातायन की कतिपय प्रमुख नाट्य–प्रस्तुतियाँ निम्नलिखित हैं–

क्र.सं.	नाटक	लेखक	निर्देशक
1	लाश	सुभाष पंत	सतीष चांद
2	शिड्यूल्ड कास्ट	लाडी	सुभाष पंत
3	तीन इंच ऊपर	निर्मल वर्मा	अवधेश कुमार
4	निशाचर	उत्पल दत्त	अशोक चक्रवर्ती
5	तीन टके की नौटंकी	बर्तोल्ल ब्रेख्त	लाडी
6	प्रह्लाद (गढ़वाली नाटक)	भवानी दत्त थपलियाल	उर्मिल थपलियाल
7	पहला विद्रोही	सुभाष पंत	अशोक चक्रवर्ती
8	आदमी आजाद है	सतीश जमाली	दुर्गा कुकरेती
9	शम्बूक की हत्या	नरेन्द्र कोहली	अशोक चक्रवर्ती
10	अन्धो का हाथी	शरद जोशी	अरूण विक्रम राणा
11	शुतुरमुर्ग	ज्ञान देव अग्निहोत्री	अशोक चक्रवर्ती
12	स्पार्टाकिस	हावर्ड फास्ट/बादल सरका	दुर्गा कुकरेती
13	राजा का बाजा	जन नाट्य मंच	राम प्रसाद 'अनुज'
14	ताल–बेताल	डी.पी. सिन्हा	राम प्रसाद 'अनुज'
15	कंजूस	मेलियर	चन्द्रमोहन बौठियाल
16	एक था गधा	शरद जोशी	अरूण विक्रम राणा
17	ये गुमनाम लोग	ज्यां पॉल सार्त्र	अशोक चक्रवर्ती
18	एक आतंकवादी का अंत	डारियो फी	हिमानी भट्ट(शिवपुरी)
19	यह तो होना ही था	बर्तोल्ल ब्रेख्त	राम प्रसाद 'अनुज'
20	आधी रात के बाद	शंकर शेष	अजय भटनागर
21	यहाँ से वहाँ तक	डी0पी0 सिन्हा	गजेन्द्र वर्मा
22	बकरी	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	गजेन्द्र वर्मा
23	ताम्र पत्र	देवाशीष मजदूमदार	गजेन्द्र वर्मा
24	आधू अधूरे	मेहन राकेश	एबनर सादिक
25	कथा एक कंस की	डी.पी. सिन्हा	रामप्रसाद 'अनुज'
26	बाजे ढिंडोरा	अशोक मिश्र	गजेन्द्र वर्मा
27	दिल्ली ऊँचा सुनती है	कुसुम कुमार	गजेन्द्र वर्मा
28	कोयला भई न राख	अवधेश कुमार	हफीज खान
29	हत्यारे	नरेन्द्र कोहली	अशोक चक्रवर्ती
30	डेढ़ इंच ऊपर	निर्मल वर्मा	मँजुल मयंक मिश्रा
31	दीमक	रवि वर्मा	मंजुल मयंक मिश्रा
32	संध्याछाया	जयवंत दलवी	रामप्रसाद 'अनुज'
33	मूंगफली के छिलके	मोहन राकेश	राकेश शर्मा (जूनून)
34	अमृतसर आ गया	भीष्म साहनी	श्रीश डोभाल द्वारा
35	ड्रेसिंग टेबल	सलिल चौधरी	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निर्देशन में
36	गैर मुल्क की लड़की	अलताफ फातिमा	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निर्देशन में
37	खोल दो	सहादत हसन मंटो	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निर्देशन में
38	सोलह जनवरी की रात	गौतम राय	मुकुल श्रीवास्तव
39	कालकोठरी	स्वदेश दीपक	गजेन्द्र वर्मा
40	देश की खातिर	डी.एस रावत	रमेन्द्र कोटनाला
41	हुकडू का खजाना	गौतम राय	मुकुल श्रीवास्तव

3.'कलामंच' देहरादून :–

कलामंच की स्थापना सन् 1976 में हुई। देहरादून की इस

प्रसिद्ध नाट्य संस्था ने अब तक लगभग सौ से अधिक नाटकों की सफल प्रस्तुतियाँ की हैं। यहाँ प्रस्तुत हैं, 'कला मंच की कुछ प्रमुख प्रस्तुतियाँ –

क्र.सं.	नाट्य प्रस्तुति	लेखक	निर्देशक
1	अंधेरे का बेटा	रेवती सरन शर्मा	डॉ. शिवलाल जोशी
2	बकरी	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	टी.के. अग्रवाल
3	बड़ी बुआ जी बादल	बादल सरकार	उत्तर चचरा
4	बयान	कमलेश्वर	सतीश चांद
5	व्यक्तिगत	डॉ. लक्ष्मीनारायणलाल	टी.के. अग्रवाल
6	थैंक यू मिस्टर ग्लाड	अनिल बर्वे	बी.एस. भारद्वाज
7	चिराग जल उठा	ज्ञानदेव अग्निहोत्री	अजय चक्रवर्ती
8	पंछी ऐसे आते हैं	विजय तेन्दुलकर	उत्तर चचरा
9	बड़ी बहू	पुलकेन्दुदास गुप्ता	अजय चक्रवर्ती
10	सिंहासन खाली है	सुशील कुमार सिंह	टी.के. अग्रवाल
11	हत्यारे	जन नाट्य मंच	जागृति डोभाल
12	हिमालय की छाया	बसन्त कानेटकर	अजय चक्रवर्ती
13	किंग इडीपस	सोफो क्लीज	टी.के. अग्रवाल
14	गोडो की इन्तजार में	सेमुअल बैकेट	सुरेन्द्रनाथ (रा.ना.वि.)
15	इतिहास रोता है	राधारमण घोष	दिव्येन्दु मुखर्जी
16	विमल उर्फ जाए तो जाए कहां (प्रायोजित)	कृष्ण बलदेव वैद	कृष्ण बलदेव वैद
17	किस्सा दुष्यन्त का	मराठी से अनुदित	ज्योतिष घिल्डियाल
18	अबू हसन	बादल सरकार	चन्द्रमोहन (रा.ना.वि.)
19	बिच्छू	मेलियर	अमरदीप (रा.ना.वि.)
20	शाबाश अनारकली	सुरेन्द्र गुलाटी	उत्तर चचरा
21	पोस्टर	डॉ. शंकर शेष	टी.के. अग्रवाल

4.'ओ.एन.जी.सी.थियेटर ग्रुप' देहरादून :–

देश के नवनत्न प्रतिष्ठानों में से एक ओ.एन.जी.सी. का मुख्यालय उत्तरांचल की राजधानी देहरादून में स्थित है।

ओ.एन.जी.सी. देहरादून का रंगमंच के विकास में बहुत बड़ा योगदान है। 1983 में जब ओ.एन.जी.सी. के कर्मचारियों ने थिएटर 'ग्रुप' को प्रश्रय दिया था। तब के निदेशक कार्मिक श्री निवासन जी का भी इस 'ग्रुप' को भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। जिसके फलस्वरूपा यह फलताफूलता हुआ एक सक्रिय रंगमंच के रूप में विकसित हुआ। आज ओ.एन.जी.सी. थियेटर ग्रुप उत्तरांचल में एक सशक्त रंगमंच के रूप में जाना जाता है। 'कथा कंस की', 'कोयला भई ना राख', 'श्री श्री 1008', 'राजा का बाजा', 'बाजे ढिंढोरा', 'दीमक', 'आला–अफसर', 'महाभोज', 'बकरी', 'वृक्ष', 'भस्मासुर', आदि नाटकों की सफल प्रस्तुतियों के साथ ओ.एन.जी.सी. थिएटर ग्रुप रंगमंच के विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। मदन मोहन डुकलान, रामेन्द्र प्रसाद कोटनाला, चन्द्रप्रकाश शर्मा, अवधेश कुमार, मंजुल मंयक मिश्रा, बी.एन. बासन्दे, डी.एन. सिंह, अम्बरीश सिंह धीरेन्द्र सेमवाल आदि इस ग्रुप के प्रमुख रंगकर्मी हैं। वर्तमान निदेशक (कार्मिक) श्री जौहरी लाल जी का भी ओ.एन.जी.सी. थिएटर ग्रुप को सहयोग प्राप्त हो रहा है।'[4]

5.'थिएटर स्पेश' देहरादून :– यह देहरादून में दून स्कूल की प्रमुख नाट्य संस्था है। वर्तमान में मोहम्मद हम्माद फारूखी जो दून स्कूल में हिन्दी–अध्यापक हैं, इस नाट्य संस्था के माध्यम से रंगमंच के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं।

6.'जागर' नई दिल्ली (उत्तरांचल प्रवासियों की नाट्य संस्था) :– गढ़वाली रंगमंच के विकास में 'जागर' का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्था ने पिछले चार दशकों में केवल अनेक प्रदर्शन ही नहीं किए हैं बल्कि अनेक नई प्रतिभाओं–नाटककारों, निर्देशकों, अभिनेता–अभिनेत्रियों को एक कार्यक्षेत्र और पनपने का अवसर दिया है। 'जागर' की प्रमुख प्रस्तुतियाँ निम्नलिखित हैं– '[5]

क्र.सं.	नाटक	टिप्पणी
1	परीक्षा	ललित मोहन थपलियाल का हिन्दी बाल एकांकी
2	दुर्जन कि कछड़ि	भवानीदत्त थपलियाल के प्रह्लाद नाटक के एक अंश का ललित मोहन थपलियाल द्वारा एकांकी करण।
3	खाडू लापता	ललित मोहन थपलियाल का गढ़वाली एकांकी
4	जिस दिन चोर आया	ललित मोहन थपलियाल का बाल एकांकी
5	अछ्यूं कु ताल	ललित मोहन थपलियाल का गढ़वाली एकांकी
6	एकीकरण	ललित मोहन थपलियाल का गढ़वाल एकांकी
7	घर जवै	ललित मोहन थपलियाल का गढ़वाली एकांकी
8	घर जवै	गिर्दा, मोहन उप्रेती द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका
9	अछ्यूं कु ताल	गिर्दा, मोहन उप्रेती द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका
10	खिलाड़ी राम का मुकद्मा	हिन्दी बोल एकांकी
11	काला राजा	ललित मोहन थपलियाल का हिन्दी नाटक
12	दूणों जन्म	किशोर घिल्डियाल
13	इन बि चल्द	'कंकाल'
14	एक जौ अगनै	वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी
15	रग–ठग	किशोर घिल्डियाल
16	रीड़ की हड्डी	जगदीश चन्द्र माथुर का हिन्दी एकांकी
17	गरीबी हटाओं	बल्लभ डोभाल का हिन्दी नाटक
18	प्रमोशन का चक्कर	रामप्रसाद नौटियाल का हिन्दी नाटक
19	जंक जोड़	राजेन्द्र धस्माना का गढ़वाली नाटक
20	अर्ध–ग्रामेश्वर	राजेन्द्र धस्माना (दिल्ली में अनेक व मुरादाबाद, मुम्बई में एक–एक प्रदर्शन)
21	अदालत	स्वरूप ढौंडियाल का गढ़वाली नाटक
22	प्रह्लाद नाटक	मूल लेखकः भवानीदत्त थपलियाल, पुनः लेखन राजेन्द्र धस्माना
23	धार	गिरधारी प्रसाद 'कंकर' का गढ़वाली नाटक
24	पैसा न ध्यल्ला गुमान सिंह रौतेला	महेश एल कुंचवार की मराठी कृति बाड़ा चिरेबंदी का गढ़वाली रूपान्तर, रूपान्तकारी राजेन्द्र धस्माना

7.'युगान्तर' देहरादून :– सन् 1983 में समान विचारधारा के अन्तर्गत कुछ युवा रंगकर्मियों ने रमेश डोबरियाल के नेतृत्व में 'युगान्तर' नाट्य संस्था का गठन किया। इस संस्था ने अब तक 'चोर के घर मोर', 'कबीरा खड़ा बाजार में', 'चन्द्रमा सिंह उर्फ चमक', 'सैंया भय कोतवाल', 'दुलाई बाई', 'एक और द्रोणाचार्य', 'जय सिद्धनायक', 'पोस्टर', 'बकरी', 'घासीराम कोतवाल', 'एक था गधा', 'उर्फ अलादादखाँ, 'अरे शरीफ लोग', 'जाँच–पड़ताल', 'गड्ढा', 'बगिया बाछाराम की', 'सिंहासन खाली है' जैसे चुनौती भरे नाटकों का मंचन किया इन सभी नाटकों का निर्देशन श्री रमेश डोबरियाल ने किया। इनमें से अधिकांश नाटकों के अनेक प्रदर्शन किए गए।

8.'गढगाथा कला मंच' देहरादून :– 'गढ़गाथा कला मंच' की स्थापना 1987 में हुई। इसके संस्थापक गढ़वाल के प्रख्यात रंगकर्मी व नाट्यकार श्री कुलानन्द घनशाला हैं। विनोद चन्दोला, दर्शन केष्टवाल, शोभन सिंह पुण्डीर, चन्द्रदत्त सुयाल, रजनी डुकलान, संगीता ढौंढियाल, चन्द्रकान्त मलासी आदि इस नाट्य संस्था से सम्बन्ध प्रमुख रंगकर्मी हैं। 'गढ़ गाथा कला मंच' द्वारा प्रदर्शित गढ़वाली नाटक निम्नलिखित हैं :– '[6]

क्र.सं.	नाटक	लेखक	निर्देशक	प्रदर्शन
1	श्री देव सुमन	गुणानन्द पथिक	राम प्रसाद सुन्द्रियाल	5
2	भारी भूल	जीत सिंह नेगी	राम प्रसाद सुन्द्रियाल	3
3	जखा–तखि (शा.का.)	कुलानन्द घनशाला	कुलानन्द घनशाला	2
4	बांजी गौड़ी	उमाकान्त बलूनी	रमेश डोबरियाल	7
5	मनखि बाघ (शा.का.)	कुलानन्द घनशाला	कुलानन्द घनशाला	10
6	अब क्या होलु (शा.का.)	कुलानन्द घनशाला	कुलानन्द घनशाला	4
7	आस औलाद	कुलानन्द घनशाला	कुलानन्द घनशाला	5
8	रामू पतरौल (शा.का.)	कुलानन्द घनशाला	जी.सी. भट्ट	3
9	घर जवै	ललित मोहन थपलियाल	रमेश डोबरियाल	3

9.'शैलनेट' टिहरी :– टिहरी की नाट्य संस्था शैलनेट की स्थापना 1985 में हुई थी। 15 अक्टूबर से 22 नवम्बर 95 तक इस नाट्य शिविर का स्थानीय आयोजन इसी संस्था द्वारा किया गया। उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग के तत्त्वावधान में उत्तरांचल नाट्य समारोह के अन्तर्गत इस रंगशिविर का निर्देशन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली के स्नातक तथा विजिटिंग एक्सपर्ट श्री श्रीश डोभाल ने किया। इन्होंने ही 1984–85 में उत्तरांचल के पाँच नगरों में स्थानीय प्रतिभाओं के सहयोग से शैलनट की स्थापना की थी। शिविर के प्रथम दस दिनों में प्रतिदिन दो घंटे व्याख्यान तथा रंगमंच का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

जिसके अन्तर्गत साहित्य (पाश्चात्य, आधुनिक, प्राचीन शास्त्रीय नाटक), प्रमुख नाट्य परंपराएँ (विश्व रंगमंच, भारतीय रंगमंच, लोक नाटक), अभिनय शैलियाँ, यथार्थवादी पद्धति, दृश्य अभिकल्पना, प्रकाश अभिकल्पना एवं व्यवस्था, वेशभूषा अभिकल्पना,

रूपसज्जा, नाट्य आलेखन व रूपान्तरण, नाटकों का प्रस्तुतिकरण व निर्देशन, अभिनय तथा रंग भाषण (वाइस, स्पीच, डिक्शन, वाचिक अभिनय) की संक्षेप में मूलभूत अवधेश कुमार (हिन्दी नाटक तथा नाट्य लेखन) ने विशेष व्याख्यान दिये।

शैलनेट टिहरी के द्वारा विद्यासागर नौटियाल जी के कथा संग्रह 'टिहरी की कहानियाँ' से चुनी हुई चार कहानियों पर आधारित निम्नलिखित नाट्य प्रस्तुतियाँ की गई– '[7]

1.परीदेश :– पहाड़ और पहाड़ की नारी के सौन्दर्य की कहानियाँ पढ़कर एक शहरी धनाढ्य नवयुवक मन ही मन पहाड़ी सौन्दर्य के उपभोग की कामना लिए नैनीताल पहुँचता है। दूध बेचने वाली एक भोली–भाली नवयुवती उसकी बहकावे में आ जाती है। मन भर जाने पर उस युवती से पीछा छुड़ाने के लिये वह उसे चंद रूपाये दे कर टालना चाहता है किन्दु बिन्दों अपना हंसिया वाला हाथ उठाकर उस शहरी धोखेबाज से कहती है– "पैसे तूने मेरी गाय के दूध के दिये हैं। मेरे उस दूध के पैसे, जिसे कुछ महीना बाद वह पियेगा, जो कुछ महीने बाद आयेगा और मुझे माँ कहेगा; उसकी कीमत कौन चुकाएगा? पानी तक नहीं माँग पाओगे, यहीं टुकड़े–टुकड़े करके रख दूंगी। देखूं तू कैसा जाता है? इस नाटक में डॉ. जगमोहन सिंह राणा, कुमारी ममता उनियाल, अनिल अग्रवाल, कुमारी अकांक्षा भट्ट, राजेन्द्र डोटियाल, सुनीता पुण्डीर, आशा डोभाल जौनपुरी आदि रंग कर्मियों ने भाग लिया।

2.भैंस का कट्या :– पहाड़ पर भैंस के नर बच्चे की पैदाइश एक विकट समस्या मानी जाती है। लोकोक्ति के अनुसार भैंस का मर्द बच्चा कहता है कि "कितखों घटकै, कित मरौं पटकै।" याने या तो जी भर कर दूध पीऊँगा या तत्काल मर जाऊँगा। ऐसी ही पैदा हुए भैंस के कट्ये से एक दम्पति छुटकारा पाना चाहते हैं। किन्तु अपने आठ वर्षीय पुत्र गबलू के उससे गहरे लगाव के कारण वे ऐसा नहीं कर पाते। दो वर्ष पश्चात् राजा के सिपाही उसे मात्र तीस रूपये में खरीद कर ले जाते हैं। महाराज द्वारा उसकी बलि देने के लिये कट्ये की गर्दन काटे जाने के ख्याल से ही गबलू सिहर उठता है। उसे लगता है कि जैसे उसके भाई की ही गरदन काटी जा रही हो। वह अपनी माँ से कहता है कि तूने उसे छांछ पिलाकर पहले ही क्यों नहीं मार डाला।

'मेरे बच्चे, तुझमें जानवरों के लिये कितनी दया है।' यह कहकर माँ स्वयं भी रो उठी पर अपने अन्दर छिपी हुई दया का उसे पता न चल पाया।

इस नाटक में राजेन्द्र डोटियाल, कुमारी लक्ष्मी नौटियाल, गीतिका भसीन, हर्षभट्ट, अनिल अग्रवाल, विक्रम बिष्ट, मनोज रांगण, पद्मलाल, विनय चमोली आदि रंगकर्मियों ने मुख्य भूमिका निभाई।

3.पीपल के पत्ते :– एक ग्रामीण पहाड़ी दम्पति को कहीं जाना है। उनके पास आधा कनस्तरी घी है। कुछ वस्तुओं जैसे घी को नगर में लाने पर राजा की तरफ से टैक्स लगता है। टिहरी शहर में पहुँचने के लिये उन्हें एक पुल पार करना है जो कि भागीरथी और भिलंगना नदी के संगम से थोड़ी दूर पर है। रास्ते में विश्राम करते हुए पति एक पीपल के पत्ते का पतबिड़ा बना कर तम्बाकू पीने लगता है तो पत्नी किसी आशंका से कांप उठती है, माँ चन्द्रबदनी का स्मरण करती है। पुल पर एक लोहे का दरवाजा लगा है जिस पर दो सिपाही तैनात है। पति के हाथ में घी की कनस्तरी देख के लपक कर उसे पकड़ लेते हैं। वह गिड़गिड़ा कर कहता है कि उसकी औरत प्रसव के लिए अपने मायके जा रही है और उसके पास सिर्फ एक सेर घी है। सिपाही उसे पुलिस थाना चलने के लिऐ कहते हैं। पुलिस थाना सुनते ही रामी पीपल के उसी पत्ते की तरह हीला हो कर कांपने लगती है जिसे मोड़ कर उसके पति ने पतबिड़ा बनाया था। देवी का नाम लेकर उसने अपने आप से पूछा 'पीपल के पत्ते का पतबिड़ा बनाने की इतनी बड़ी सजा ?'

इस नाटक में डॉ. डी.एस. राणा, कुमारी राखी आर्य, विपिन थपलियाल, मनोज रांगण, कमल खण्डूरी, प्रकाश, मनमोहन, महिपाल सिंह आदि रंगकर्मियों ने भाग लिया।

4.घास :– गाँव की सब घसियारनें भोर से पहले ही पशुओं के चारे के लिए घास लेने जंगल की तरफ निकल पड़ती हैं। रूपसा पीछे छूट जाती है उसकी भैंस बीमार है। वह दौड़कर अपनी सहेलियों के पास जल्द से जल्द पहुँच जाना चाहती है। उसका फौजी पति भी इस समय कहीं पर दौड़ लगा रहा होगा। रूपसा का पेट पालने के लिए दौड़ रहा है और रूपसा अपनी भैंस का पेट पालने के लिए दौड़ रही है। टिहरी के पुल पर लोहे का दरवाजा बन्द पड़ा है और रूपसा को पुल पार करना है। वह दरवाजा खटखटाती है। पुलिस वाले इसी मौके का इन्तजार कर रहे हैं। उनका उनकी हवस का शिकार होकर वह जंगल में पहुँचती है और अन्य दिनों की अपेक्षा अपनी भैंस के लिए अधिक से अधिक घास इकट्ठा करती है। पीछे से पतरोल आ जाता है और उसकी हंसिया छीन लेता है। घास के गट्ठर में बंधी डोरी को खोलने के लिए लपकता है तो रूपसा कातर स्वर में उसे डोरी न खोलने के लिए कहती है और उसे आत्मसमर्पण करना पड़ता है।

इस नाटक में शिवानी चन्देल, डॉ. उषा भसीन, जे.डी. सेमवाल, गोवर्धन सीमा जोशी, ऋचा अग्रवाल, राखी जौनपुरी, अनुपमा नौटियाल, सुनिता पुण्डीर, अनूप बिष्ट, मनोज रांगड़, शैलेन्द्र नौटियाल, विपिन थपलियाल आदि रंगकर्मियों ने मुख्य भूमिका निभाई।

शैल नट की टिहरी के अलावा गोपेश्वर, श्रीनगर, कोटद्वार, हल्द्वानी में भी नाट्य संस्थाएँ हैं। समय–समय पर ये नाट्य संस्थाएँ अनेक नाटकों का मंचन तो करती ही हैं साथ ही रंगकर्मियों के प्रशिक्षण के लिए रंग शिविरों का आयोजन भी करती हैं। श्रीनगर में डॉ. डी.आर. पुरोहित शैलनट के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। शीर्ष रंगकर्मी श्रीशडोभाल शैलनट को विस्तार देते हुए उत्तरांचल में रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

10.'कलादर्पण' उत्तरकाशी :– राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली से परास्नातक सुवर्ण रावत ने वर्ष 1987 में उत्तरकाशी में कलादर्पण का गठन किया। इससे पूर्व उत्तरकाशी में सुरेन्द्र बलोदी की नाट्य संस्था 'मुनाल' सक्रिय थी। जिसकी स्थापना सुरेन्द्र बलोदी ने 1980 में की थी। पूर्ण कालिक नाटक 'कलादर्पण' के गठन के पश्चात् ही शुरू हुए। डॉ. गोविन्द चातक रचित 'काला मुँह' नाटक कलादर्पण का पहला नाट्य मंचन था। इसके अलावा 'बांसुरी बजती रही', 'अंधेर नगरी', 'अंधा कुँआ', 'दूर का आकाश', 'कबिरा खड़ा बाजार में', 'आषाढ़ का एक दिन', 'होली', 'इंसाफ का घेरा', 'बीस सौ बीस' जैसे नाटकों के सफलता पूर्वक मंचन करने का श्रेय भी कलादर्पण को जाता है। यह नाट्य संस्था नाट्यान्दोलन को आगे बढ़ती रही है। इतना ही नहीं, उत्तरांचल आन्दोलन के दौरान भी संस्था अपनी सक्रिय भागीदारी निभाती रही। इससे पूर्व मुजफ्फरनगर काण्ड की बरसी (2 अक्टूबर 2011) एवं उत्तरांचल राज्य की स्थापना की – वर्षगांठ (9 नवम्बर 2001) पर भी 'कला–दर्पण' दिल्ली द्वारा सुवर्ण रावत के निर्देशन में ही लोक कला–मंच व हिन्दी भवन प्रेक्षागृह में इस नाटक का मंचन किया जा चुका है। बहरहाल उत्तरांचल की सीमा से दूर राष्ट्रीय राजधानी में 'भारत रंग महोत्सव' जैसे विशाल व भव्य आयोजन में भागीदारी करके 'कला–दर्पण' व रंगकर्मी सुवर्ण रावत की जो पहचान पुख्ता हुई, उसका परिणाम सुखद ही होना चाहिए।

11.'हाई हिलर्स ग्रुप' नई दिल्ली (उत्तरांचल प्रवासियों की

नाट्य संस्था) :– 'हाई हिलर्स ग्रुप नई दिल्ली में प्रवासी गढ़वालियों की नाट्य संस्था है जो गढ़वाल की संस्कृति पर आधारित नाटकों का मंचन करती है। वर्तमान में राजेन्द्र धस्माना के नेतृत्व में हाई हिलर्स ग्रुप ने दिल्ली, मुम्बई, कानपुर आदि महानगरों के साथ–साथ टिहरी पौड़ी व उत्तरकाशी में अनेक नाटकों का मंचन किया है। इनमें से अर्धग्रामेश्वर, जंकजोड़, पैसा न ध्यल्ला गुमान सिंह रौतेला, प्रह्लाद, माधोसिंह भण्डारी आदि प्रमुख हैं।'[8]

12.'हुक्का क्लब' (श्री लक्ष्मी भण्डार) अल्मोड़ा :– हुक्का क्लब (श्री लक्ष्मी भण्डार) की स्थापना कुमाऊँनी रामलीलाओं के कलापक्ष को मजबूत करने के उद्देश्य से सन् 1907 में अल्मोड़ा में हुई। इस क्लब के माध्यम से सन् 1978 से रामलीला का विधिवत मंचन शुरू हुआ। आज अल्मोड़ा में सबसे अच्छी रामलीला का मंचन इसी क्लब के माध्यम से माना जाता है। अल्मोड़ा शहर में रामलीला शुरू होते ही अल्मोड़ा वासियों में विशेष उत्साह दिखाई देता है। बच्चों से लेकर बूढ़े तक रावण परिवार के पुतले बनाने में अपना सहयोग देते हैं। पुतले रामलीला कमेटियों के अतिरिक्त अलग–अलग मुहल्लों में भी तैयार किए जाते हैं। बड़े लोगों के अतिरिक्त बच्चे भी पुतला अलग से तैयार करते हैं। विजयदशमी के दिन सभी पुतले माल रोड़ में इकट्ठे किए जाते हैं, जहाँ प्रतियोगिता के आधार पर सर्वश्रेष्ठ पुतला घोषित किया जाता है। बाद में पुतला कमेटियों द्वारा बैण्ड बाजों के साथ मुख्य बाजार होते हुए पुतलों को दहन के लिए स्टेडियम में ले जाया जाता है तथा आतिशबाजी के साथ पुतलों का दहन किया जाता है। अल्मोड़ा में इस पूरे आयोजन का श्रेय हुक्का क्लब (लक्ष्मी भण्डार) को जाता है। हमारी इस विषय पर वर्तमान में हुक्का क्लब शिवचरण पाण्डे से बातचीत हुई। उन्होंने बताया कि हुक्का क्लब लगभग 95–96 वर्षों से कुमाऊँ की रामलीला को लोकप्रिय बनाने में अपना सहयोग दे रहा है। दिल्ली व लखनऊ में भी हुक्का क्लब के तत्वावधान में रामलीलाओं का आयोजन हुआ है।

13.'जन नाट्य मंच' अल्मोड़ा :– 'जननाट्य मंच' की स्थापना 1982 में अल्मोड़ा में हुई। इस नाट्य संस्था ने कुमाऊँनी भाषा में नाटकों का मंचन नहीं किया। (कुमाऊँनी भाषा में नाटक लिखने की परम्परा नहीं रही)। इस नाट्य संस्था ने अनेक हिन्दी नाटक व नुक्कड़ किए। 'जन नाट्य मंच' की स्थापना कुछ रंगकर्मियों ने मिलकर की जिनमें महेन्द्र सिंह बिष्ट, प्रदीप पाठक, दिनेश पाण्डे, आरती जोशी, मनमोहन चौधरी, क्रान्ति कुमार जोशी, अशोक पंत व प्रमोद चन्द्र तिवारी प्रमुख हैं। 'जननाट्य मंच' ने 500 के आस–पास नुक्कड़ नाटक किए हैं व 60 के आस–पास बड़े नाटक किए हैं।

1990 में धर्मवीर भारती कृत 'अन्धायुग' का मंचन निर्मल पाण्डे के निर्देशन में किया गया। 1988 में कमलकान्त पाण्डे निर्देशित 'कबिरा खड़ा बाजार में' का मंचन किया गया। 'जंगीराम की हवेली', 'चरणदास चोर', पोस्टर', 'इन्सपेक्टर मातादीन चांद पर' आदि नाटकों के सफल मंचन का श्रेय भी 'जन नाट्य मंच' को जाता है।

जननाट्य मंच ने नेक कुमाऊँनी लोकगाथाओं का हिन्दी नाट्य रूपान्तरण करके उनका मंचन भी किया। 'राजुला–मालूशाही' नाटक का मंचन इसी प्रकार का प्रयास था। 'जननाट्य मंच' ने अनेक प्रतिभाओं को उभारा है, जो आज राष्ट्रीय संस्थानों से प्रशिक्षण लेकर रंगमंच की शोभा बढ़ा रहे हैं। समीप सिंह(एन.एस.डी. स्नातक), आलोक वर्मा(एन0एस0डी0 स्नातक व सहारा संचार में कार्यरत), ललित तिवारी (एफ.टी.आई.आई. पूना से प्रशिक्षित), मनोज पीटर (एफ.टी.आई.आई. पूना से प्रशिक्षित), दीपक चन्द्र (श्रीराम कला केन्द्र दिल्ली से प्रशिक्षित), और संजय पाटक, उपेन्द्र अग्निहोत्री व नन्दन रौतेला (भारतीय नाट्य अकादमी लखनऊ से निकल कर) रंगमंच के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। बॉलीवुड के जाने–माने अभिनेता(खलनायक का अभिनय करने वाले) निर्मल पाण्डे भी युगमंच नैनीताल से पूर्व 'जननाट्य मंच' अल्मोड़ा में सक्रिय रहे।'[9]

14.शैलनट श्रीनगर :– शैलनट श्रीनगर के संस्थापक अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र प्रसाद मंमगाई जी से 'तेरी सौं' फिल्म की शूटिंग के समय हमारी मुलाकात हुई। उन्होंने बताया कि शैलनट (1985) की स्थापना से पूर्व श्रीनगर में 'सरस कला संगम' नाट्य संस्था अस्तित्व में थी। सन् 1974 में 'सरस कला संगम' की स्थापना हुई। इस नाट्य संस्था का पहला मंचित नाटक श्री राधेश्याम कथावाचक लिखित 'श्रीकृष्ण' था। श्रीनगर के रामलीला मैदान में दस हजार दर्शकों के सामने कृष्ण जन्माष्टमी 09 अगस्त 1974 को इस नाटक का भव्य मंचन किया गया। स्वयं सुरेन्द्र प्रसाद मंमगाई के निर्देशन में इस नाटक का मंचन किया गया। प्रेम सडाना, एस0पी0 चौकियाल, भगवती प्रसाद काला आदि रंगकर्मियों ने इस नाटक में मुख्य भूमिका निभाई।

सरस कला संगम का दूसरा मंचित नाटक राधेश्याम कथावाचक लिखित "वीर अभिमन्यु" था। इस नाटक का मंचन 1975 में बैकुण्ठ चतुर्दशी मेले के अवसर पर किया गया। अब तक सरस कला संगम से सैकड़ों सदस्य जुड़ चुके थे, इसलिये किसी प्रकार की आर्थिक समस्या से नहीं जूझना पड़ा। सन् 1976–77 में सरस कला संगम के सदस्यों ने श्री सुरेन्द्र प्रसाद मंमगाई जी को रामलीला आयोजन का सुझाव दिया और फिर इस समृद्ध नाट्य संस्था ने लगातार तीन वर्षों तक भव्य रामलीलाओं का आयोजन किया। श्री मंमगाई ने बड़े दुख के साथ कहा कि सन् 1980 के आसपास श्रीनगर में संस्था के स्थानीय सदस्यों के मदिरापान से तंग आकर उन्हें इस नाट्य संस्था को विसर्जित करना पड़ा। सन् 1985 में श्रीनगर में एन.एस.डी. ने रंगकर्म में रूचि रखने वाले लोगों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला के आयोजन में श्रीशडोभाल का विशेष योगदान रहा। इसी वर्ष श्रीनगर में श्रीश डोभाल के द्वारा शैलनट की स्थापना कर दी गई, जिसके संस्थापक अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मंमगाई जी रहे। शैलनट श्रीनगर की पहली नाट्य प्रस्तुति 'एक और द्रोणाचार्य' थी। इसमें द्रोणाचार्य की भूमिका में श्री सुरेन्द्र मंमगाई व यदु की भूमिका में श्री डी.आर. पुरोहित थे। 1986 में शैलनट श्रीनगर की दूसरी नाट्य प्रस्तुति 'खजुराहो का शिल्पी' रही। इस नाटक में श्री डी.आर. पुरोहित ने धर्माचार्य का अभिनय किया। इन नाट्य प्रस्तुतियों के अतिरिक्त, मोहन राकेश रचित 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे–अधूरे' शंकर शेष रचित 'कालजयी', 'कथा एक कंस की' आदि नाटक शैलनट की प्रमुख प्रस्तुतियाँ रही हैं।

वर्तमान में शैलनट श्रीनगर एक फलती–फूलती नाट्य–संस्था के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी है।'[10]

15.'स्पन्दन' देहरादून :– 'स्पन्दन' नाट्य संस्था की स्थापना इसी वर्ष 2002 में कुमारी श्वेता विज (भारतेन्दु नाट्य केन्द्र से प्रशिक्षित) के साथ कुछ रंगकर्मियों ने मिलकर की। इस नाट्य संस्था ने 'संक्रमण' कहानी पर 'पीढ़ियों की कथा' नामक नाटक का दो बार सफल मंचन किया। देहरादून के प्रख्यात रंगकर्मी गजेन्द्र वर्मा भी इस नाट्य संस्था से जुड़े हुए हैं।

16.'दून बाल नुक्कड़, नाटक दल' देहरादून :– 'दूनबाल नुक्कड़, नाटक दल' की स्थापना 1988 में श्री अतुल शर्मा ने की। श्री अतुल शर्मा इस नाट्य संस्था के माध्यम से बच्चों के बीच कार्य करते हैं। जिस समय श्री अतुल शर्मा ने इसकी शुरूआत की थी उस समय यह अपनी तरह का पहला कार्य था।'[11]

श्री अतुल शर्मा स्वयं नाटक भी लिखते हैं और फिर, बच्चों के पास विद्यालय अथवा नुक्कड़, चौराहों, सड़कों, चौपालों में पहुँच जाते हैं और फिर शुरू हो जाता है नुक्कड़, नाटक। बूढ़ाकेदार (टिहरी), मसूरी, उत्तरकाशी, नैनीताल व देहरादून में अनेक नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन करके 'दून बाल नुक्कड़ नाटक दल' ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इस नाट्य संस्था का प्रथम प्रदर्शन 'एक

थी पूनम' नामक नुक्कड़ नाटक रहा। 'खबरों का खजाना', 'मास्टर जी', लोककथा', 'गिरगिट', गड्ढा आदि नुक्कड़ नाटक इस नाट्य संस्था के प्रभावकारी प्रदर्शन है। श्री अतुलशर्मा के नेतृत्व में यह नाट्य संस्था निरन्तर प्रगतिशील है।

इनके अतिरिक्त भी अनेक नाट्य संस्थाएँ उत्तरांचल में अपना सक्रिय योगदान दे रही है। सबका उल्लेख करना यहाँ संभव नहीं है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में जिन रामलीला समितियों का अस्तित्व है, उनकी संख्या इतनी अधिक है कि वर्णन नहीं किया जा सकता है। ये 'रामलीला समितियाँ' संपूर्ण उत्तरांचल में रंगमंच के विकास की आधारशिला रही है।'[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

1.'युगमंच' नैनीताल के अध्यक्ष श्री जहूर आलम से की गई बातचीत पर आधारित।
2.श्री जहूर आलम (अध्यक्ष 'युगमंच' नैनीताल), से की गई बातचीत पर आधारित।
3.श्री मदन मोहन डुकलान से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
4.श्री रामेन्द्र कोटनाला(प्रख्यात रंगकर्मी) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
5.श्री राजेन्द्र धस्माना(दिल्ली दूरदर्शन के पूर्व समाचार सम्पादक तथा प्रख्यात रंगकर्मी/नाटककार) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
6.श्री कुलानन्द घनशाला(गढ़गाथा कला मंच के संस्थापक तथा प्रख्यात रंगकर्मी) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
7.श्री श्रीश डोभाल(राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक/शैलनट के संस्थापक/प्रख्यात रंगकर्मी) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
8.श्री सुरेन्द्र बलोदी('मुनाल' नाट्य संस्था के संस्थापक/'कलादर्पण' उत्तरकाशी के सक्रिय सहयोगी) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
9.श्री प्रमोद चन्द्र तिवारी(प्रख्यात रंगकर्मी) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
10.श्री सुरेन्द्र प्रसाद मंमगाई (शैलनट श्रीनगर के संस्थापक अध्यक्ष तथा प्रख्यात रंगकर्मी) तथा डॉ. डी.आर. पुरोहित(केन्द्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल में अंग्रेजी के आचार्य तथा शैलनट श्रीनगर के प्रमुख संरक्षक) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
11.श्री गजेन्द्र वर्मा('स्पन्दन' नाट्य संस्था के संस्थापक/प्रख्यात रंगकर्मी) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
12.श्री अतुल शर्मा('दूल बाल नुक्कड़ नाटक दल' के संस्थापक तथा प्रख्यात रंगकर्मी) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.in